कृष्ण बलदेव वैद की तीसरी डायरी 'डुबोया मुझको होने ने' से लिया गया एक अंश जो उन्होंने भारतीय चित्रकार जगदीश स्वामीनाथन की मृत्यु पर लिखा

आज सुबह (25-4-94) स्वामीनाथन चल बसा। अचानक।

हम पाली और आशा के साथ नाश्ता कर रहे थे और उसके समधियों के घर जाने को तैयार बैठे थे कि अशोक का फ़ोन आया कि कुछ ही देर पहले उन्हें खबर मिली कि स्वामी बेहोश हो गया है। मैंने स्वामी के घर फोन किया तो कालीदास ने बताया कि स्वामी बचेगा नहीं। हम उसी वक्त स्वामी के घर को चल दिए। पता नहीं मैंने गाड़ी कैसे चलाई। हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही स्वामी जा चुका था। जब हम ऊपर पहुँचे तो स्वामी की लाश उस बड़े कमरे में पड़ी हुई थी जिसमें वह काम किया करता था। धोती, दाढ़ी, मुँह खुला, बाल दीवान के सिरे से नीचे लटक रहे थे। मनजीत बावा उसके हाथ पकड़े उसके पास यूँ बैठा था जैसे उसके जाग उठने का इंतज़ार कर रहा हो। मैंने स्वामी को छुआ और छूते ही मैं फूट पड़ा, मनजीत मेरे साथ।

रिश्तेदार और चित्रकार दोस्त आ रहे थे। भिवानी की हालत ख़राब थी। स्वामी की बहनें चुपचाप रो रही थीं। कालिदास और हर्षा इधर-उधर डोल रहे थे। स्वामी सबसे बेखबर और दूर था।

शाम। कुछ ही देर पहले श्मशान घाट से लौटे। जब स्वामी की लाश पर लकड़ियाँ रखी जा रही थीं तो रामू मेरे साथ खड़ा था। उसका ग़म बातों में बह रहा था, मेरा खामोशी में। अशोक भी ऐसे अवसरों पर खामोश नहीं रह पाते।

कल रात नींद कई बार टूटी।

स्वामी के चाहने वालों को उसके दोष भी उसके गुण नज़र आते थे -- मसलन उसका न नहाना, उसकी बदपरहेजियाँ, उसके आत्मालाप, उसका अंहकार। वह बिलाशक एक असाधारण बल्कि विलक्षण शख्स था। डॉक्टरों से वह डरता था। वह अपना डॉक्टर आप था। अपनी नब्ज़ टटोलता रहता था, अपने लिए दवाइयाँ भी खुद ही तजवीज़ करता रहता था। दाँत का दर्द हो या दिल का, अपना इलाज़ वह खुद ही कर लिया करता था। धार्मिक नहीं था, आध्यात्मिक था। उसकी आवाज़ में हरारत और मुस्कराहट में शरारत थी।

एक बचकाना-सी सादगी।

स्वामी एक बहुत बड़ा अभिनेता या नेता भी हो सकता था। लेकिन वह अदंर से एक मस्तमौला, फक्कड़ और एक निहायत मौलिक कलाकार ही था।

उसे अपने परिवार से अथाह प्यार था। बातें करते-करते वह खो जाता था और खोया-खोया सजग हो उठता था।

स्वामी की आँखों की गहराइयों में लोग अक्सर खो जाया करते थे।

पी कर वह पीरोमुरशिद भी हो सकता था और गुस्सैल भेड़िया भी।

उसके घर की बेसरोसामानी में भी एक विलक्षण सलीका था।

गुस्सा और गमगुसारी। अतिभावुकता और अतिसंयत समझ-बूझ। बज़्मआराई और एकान्तप्रियता। लगन और अलगाव। खुदी और बेखुदगी। जलवत और खिलवत।

शामों का शहंशाह। पीरेमुगां। रिन्दाना बांकपन।
अपना मज़ाक उड़ाने की क्षमता। अपनी गलतियों को कबूल कर लेने की क्षमता। बेगरजी की क्षमता।

शाम। अभी-अभी स्वामी के घर से लौटे हैं। मनजीत वहीं था। कुछ देर बाद अशोक भी आ गए। कालिदास अजीजाना अंदाज़ में मेरे पास बैठा रहा। कल शोक सभा है।

कल शाम त्रिवेणी में स्वामी की याद में हम सब इकट्ठे हुए। हाल भर गया। बोलने वालों में मैं भी था। बाद में हर्षा ने धीमे से मेरे कान में कहा -- आप जो बोले वह सबसे अच्छा था। हॉल से बहार निकलते ही मैं ठोकर खाकर बुरी तरह गिरा। बच गया लेकिन दोनों टाँगें छिल गईं। रास्ते में आईआईसी में रुके। जब बाकी लोग चले गए तो रामू बहुत उदास नज़र आया, इसलिए हम कुछ देर उसके साथ बैठे रहे। जब हम चलने लगे तो रामू बोला कि अगर वह हमारे साथ हमारे घर चलें तो हमें कोई एतराज़ तो नहीं होगा। हमने पुरतापाक तरीके से उसे साथ ले लिया। वह बंगाली मार्किट वाले अपने कमरे में उस रात अकेला नहीं सोना चाहता था। हम आधी रात घर पहुँचे। स्वामी की याद में एक-एक जाम और लिया, खाना खाया, स्वामी को याद किया, और दो बजे सोए।

जब मैं बोल रहा था तो मेरी नज़र कृष्णा और अमजद अली खाँ पर बार-बार जा टिकती रही। जब-जब मेरी आवाज़ में उर्दू का रंग आया तब-तब अमजद का सर सराहना में हिला।

अभी-अभी कालिदास से बात हुई। भिवानी के बारे में बात हुई। डॉक्टर उसे वेलियम देना चाह रहा है। कालिदास ने बताया कि स्वामी कोई वसीयत नहीं छोड़ गया है, इसलिए कई कानूनी झमेले उठेंगे। गेलरी वाले भी बेईमानियाँ कर रहे हैं। बैंक में जो पैसा है उसे हाथ नहीं लगाया जा सकता।

स्वामी का मातम कर रहा हूँ इसलिए काम नहीं हो रहा। बार-बार मृत स्वामी कि बँधी हुई दाढ़ी सामने आ जाती है। उसके जबड़ों को बंद करने के लिए उन्हें बाँधना पड़ा था। उसके माथे का ठंडा स्पर्श मुझे याद है, और उसके सरहाने बैठी उसकी बहन का झुका हुआ चेहरा। उसके जाने के बाद अब कृष्णा के सिवा मेरा कोई समकालीन दोस्त बाकी नहीं रहा।